मनोजवं मारुततुल्यवेगम्

Manojavam Marutatulya Vegam • श्लोक • देवनागरी

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये॥

रचना / पाठ-परंपरा: पारंपरिक हनुमान ध्यान श्लोक
पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।